हंसा कहो

सन्त-कवि कबीर जी द्वारा लिखित भजन

हे हंस, तुम मुझे अपनी पुरातन कहानी सुनाओ।

हे हंस, तुम किस लोक से आए हो? तुम किन-किन घाटों [तटों] पर उतरे हो?

हे हंस, तुम कहाँ विश्राम करोगे और तुम्हारी श्रद्धा किसमें है?

हे हंस, तुम अमृतमय साम्राज्य से आए हो और अब तुम भवजल घाट [संसार-सागर के तट] पर उतरे हो!

तुमने माया में खुद को भुला दिया है। इस कहानी में क्या तुम्हें स्वयं अपना विस्मरण हो गया है?

किन्तु, अब सवेरा हो चुका है, हे हंस। जागो और मेरे साथ चलो।

वहाँ [उस अमृतमय साम्राज्य में] ना शोक है और न ही संशय है; और न ही वहाँ काल [मृत्यु] का भय है।

उस लोक में सोऽहम् [मैं 'वह' हूँ] की सुगन्ध से वसन्त के वनों में बहार छाई है। वहाँ, मन ऐसे भँवरे के समान है जो संसार में नहीं उलझता और उसे सोऽहम् की सुगन्ध के अतिरिक्त अन्य किसी भी सुख की अभिलाषा नहीं होती।

हम सुषुम्ना में प्रवेश करेंगे और जैसे एक मकड़ी जाले के तन्तु पर चलते हुए ऊपर चढ़ती जाती है वैसे ही हम ऊर्ध्वगमन करेंगे [ऊपर की ओर बढ़ते जाएँगे]।

हे हंस, इस डोरी पर चढ़ते जाओ, चढ़ते जाओ! यही सद्गुरु का उपदेश है!

जहाँ सन्तों के लिए एक सिंहासन विद्यमान है, वहाँ चँवर [पंखे] के हिलने से सोऽहम् की हवा प्रवाहित होती है।

हे साधो, सुनो, कबीर कहते हैं कि यह सीख सद्गुरु का मुकुट है।

सन्त कबीर [लगभग १४४०-१५१८] एक आत्मज्ञानी व रहस्यवादी कवि थे जो वाराणसी, भारत में निवास करते थे। वे अपना जीवन-यापन एक जुलाहे के रूप में करते थे। शैशवावस्था में वे एक मुसलमान दम्पती को मिले थे जिन्होंने उन्हें गोद ले लिया। कबीर जी का जन्म-वृत्तान्त अज्ञात है। कबीर जी हिन्दू परम्परा के गुरु रामानन्द के भक्त बने जिन्होंने कबीरदास को यह प्रतीति कराई कि ईश्वर रूपातीत है और सभी धर्मों के परे है। सन्त कबीर के दोहे व भजन विश्वप्रसिद्ध हैं।

अंग्रेज़ी भाषान्तर — मैत्रेय लॅरिओस
फ़ोटोग्राफ़ — जैफ़री मैन
मुखपृष्ठ डिज़ाइन — हीरा टैनर और प्रीति कार्डेनस

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।